रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एंटीमाइक्रोबियल रेज़िस्टेंस - एएमआर)?

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड

जब रोगाणु, दवाओं (जैसे एंटीबायोटिक्स) पर प्रतिक्रिया करना बंद कर देते हैं, तो इसे एएमआर कहा जाता है। इससे मनुष्यों, पशुओं और पौधों में रोगों का इलाज कठिन और महंगा हो जाता है।

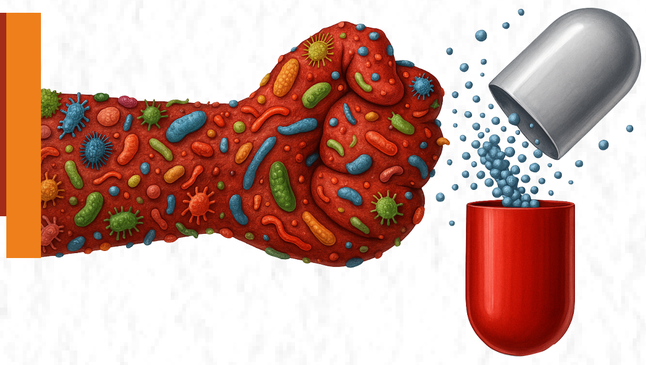

एएमआर के मुख्य प्रकार कौन से है?

- जीवाणुरोधी प्रतिरोध
- बाह्यपरजीवी प्रतिरोध
- कृमिनाशक प्रतिरोध

एएमआर कैसे होता है?

जीवाणुरोधी, बाह्यपरजीवी, कृमिनाशक प्रतिरोध होने के मुख्य कारण:

1. दवाओं का अंधाधुंध उपयोग
2. कम मात्रा (अंडर डोज़िंग) देना
3. कमजोर जैव सुरक्षा

हमें इसकी चिंता क्यों करनी चाहिए? एएमआर के ख़तरे

पशु स्वास्थ्य

- गाय और भैंस में इलाज का असर नहीं होता है
- इलाज की लागत बढ़ जाती है
- दूध उत्पादन में कमी

एएमआर से किसानों की आमदनी कम होती है!

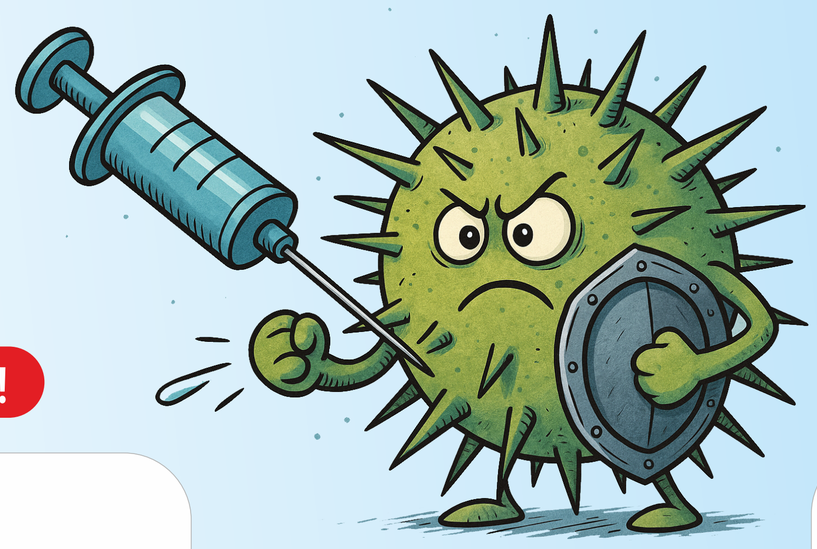

मानव स्वास्थ्य

- संक्रमण का इलाज करना कठिन हो जाता है
- अस्पताल का खर्चा बढ़ जाना

एएमआर से स्वास्थ्य सेवाओं की लागत बढ़ती है

खाद्य सुरक्षा

दूध और मांस में अवशेष रह सकते हैं, जिससे उपभोक्ता को नुकसान और निर्यात अस्वीकार होने का खतरा होता है

कृषि पर प्रभाव

मिट्टी के जीवाणु भी प्रतिरोधी हो जाते हैं, जिससे पौधों का स्वास्थ्य और पर्यावरण प्रभावित होता है

पर्यावरण स्वास्थ्य

प्रतिरोधी जीवाणु और गोबर एवं मूत्र मे एंटीबायोटिक के अवशेष जमीन और पानी को प्रदूषित करते हैं

इससे पशुओं और मनुष्यों में एएमआर का ख़तरा बढ़ता है !

बाह्यपरजीवी प्रतिरोध:
टिकनाशक का बार-बार और गलत उपयोग करने से किलनी में प्रतिरोध विकसित हो जाता है

टिक-जन्य रोगों का ख़तरा बढ़ जाता है !

कृमिनाशक प्रतिरोध

कृमिनाशक प्रतिरोध:
कृमिनाशक दवाओं के अत्यधिक उपयोग से कीड़े प्रतिरोधी बन जाते हैं

पशुओं की उत्पादकता घट जाती है !

एक समाधान : वन हेल्थ दृष्टिकोण

- एंटीबायोटिक्स, किलनीनाशक और कृमिनाशकों का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग
- उचित जैव सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन करें
- कचरे का उचित निकाल करें
- दवा की सही मात्रा के लिए हमेशा पशु चिकित्सक से परामर्श करें
- स्वयं दवा लेने से बचें
- जहाँ भी संभव हो पारंपरिक पशुचिकित्सा (ईवीएम) अपनाएँ

ईवीएम के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

थनेला | कृमिनाशक | किलनी | बुखार | दस्त

आज ही एएमआर को रोको !